अध्याय

03

सवैया और कवित्त

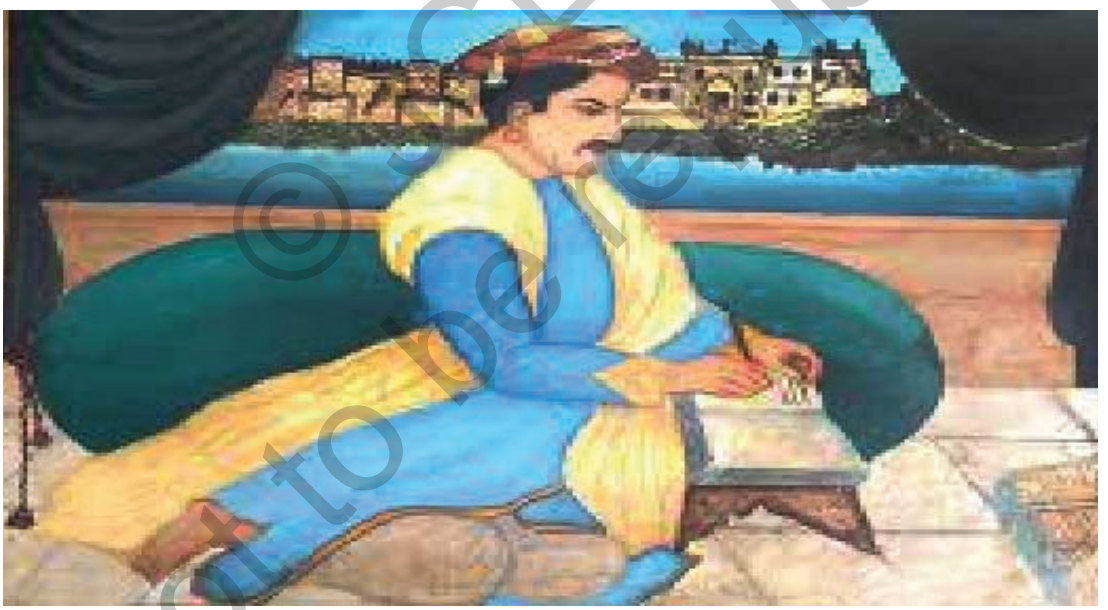

कवि देव

© NCERT not to be republished

कवि देव
जीवन -परिचय

जन्म- सन् 1673 ई., इटावा,उत्तर प्रदेश
मृत्यु - सन् 1767 ई., पूरा नाम -देवदत्त

इनके ग्रंथों की संख्या 52 से 72 मानी जाती है,परन्तु प्रामाणिक कुछ ग्रंथ—भावविलास, भवानी विलास,रसविलास, कुशल विलास, जातिविलास, राग रत्नाकर, काव्य रसायन

इनके अनेक आश्रयदातओं में औरंगजेब के पुत्र आजमशाह भी थे।
इनको सबसे ज्यादा सम्मान भोगीलाल (मोतीलाल) से प्राप्त हुआ।

रीतिकाल के प्रमुख कवि थे।
देव आचार्य और कवि दोनों रुप में मान्य हैं।
रीतिकाल के कवियों में ये बड़े प्रगल्भ और प्रतिभा सम्पन्न कवि थे।
कवित्व शक्ति और मौलिकता इनमें खूब थी।
अलंकारों में अनुप्रास, उपमा, रुपक, प्रतीप इन्हें प्रिय थे।
इनकी भाषा साहित्यिक ब्रजभाषा है।
माधुर्य गुण से युक्त इनकी कविता गेय है।

कविता
परिचय

सवैया

सवैया एक प्रकार का वार्णिक छंद है,जिसके प्रत्येक चरण में 21 से 24 वर्ण होते हैं।

प्रस्तुत सवैया में श्री कृष्ण के सामंती वैभव का चित्रण किया गया है।

श्री कृष्ण के श्यामल शरीर के पैरों में पाजेब, कमर में करधनी, गले में वैजयंती माला एवं माथे पर किरीट सुशोभित हो रहे हैं।

साहित्यिक ब्रजभाषा में रचित यह सवैया माधुर्य गुण से युक्त है।

6 अनुप्रास एवं रूपक अलंकार प्रयुक्त हुए हैं।

© JCERT not to be republished

(कवित्त)

- कवित्त एक प्रकार का वार्णिक छंद है, जिसके प्रत्येक चरण में 31—31 वर्ण होते हैं।
- पहले कवित्त में ऋतुराज बसंत के बाल रूप का वर्णन हुआ है।
- ऋतुराज बसंत के बाल रूप में आगमन से प्रकृति के सारे उपादान स्वागत को तत्पर हैं।
- दूसरे कवित्त में शरदकालीन पूर्णिमा की रात में चाँद— तारों से भरे आकाश की शोभा का वर्णन किया गया है।
- अनुप्रास, उपमा एवं प्रतीप अलंकार बड़ी तन्मयता से प्रयुक्त हुए हैं।

काव्यांश — 1 (सवैया)

पाँयनि नूपुर मंजू बजैं,कटि किंकिनि कै धुनि की मधुराई।

साँवरे अंग लसै पट पीत, हिये हुलसै बनमाल सुहाई ।

माथे किरीट बड़े दृग चंचल,मंद हँसी मुखचंद जुन्हाई।

जै जग-मंदिर-दीपक सुंदर,श्रीबजदूलह 'देव'सहाई।।

शब्दार्थ –

पाँयनी–	पैर,
नूपुर–	पायल,
मंजु–	सुंदर,
कटि–	कमर,
किंकिनि–	कमर में पहनने वाला आभूषण,
धुनि–	आवाज,
साँवरे–	साँवले,
लसै–	सुंदर,
पट पीत–	पीले वस्त्र,
हिये–	हृदय,
हुलसै–	आनंदित हो रहा है,
बनमाल–	बैजयंती माला,
किरीट–	मुकुट,
दृग–	आँखें,
मुखचंद–	चाँद रुपी मुख,
जुन्हाई–	चाँदनी,

© JCERT not to be republished

जग-	मंदिर
दीपक-	संसार रूपी मंदिर के दीपक के समान,
श्री ब्रजदूलह-	ब्रज के दूल्हे,
सहाई-	सहायता करें

प्रसंग- प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' भाग- 2 कवि देव द्वारा रचित सवैया से उद्धृत है। इस सवैया में कवि ने श्री कृष्ण के रूप— सौंदर्य का आलंकारिक चित्रण किया है, जिसमें रीतिकाल का सामंती वैभव झलकता है।

व्याख्या - प्रस्तुत सवैये में कृष्ण के राजसी रूप का वर्णन किया गया है। श्री कृष्ण के पैरों से पायल की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ रही है। कृष्ण ने कमर में करघनी पहन रखी है, जिसकी धुन भी मधुर लग रही है। उनके साँवले शरीर पर पीला वस्त्र है और उनके गले में वन के फूलों की माला बड़ी सुंदर लग रही है। उनके सिर पर मुकुट सजा हुआ है जिसके नीचे उनकी चंचल आँखें सुशोभित हो रही हैं। उनका मुँह चाँद जैसा लग रहा है जिससे मंद— मंद मुसकान की चाँदनी बिखर रही है।कवि देव कहते हैं कि संसार रुपी मंदिर के जलते हुए सुंदर दीपक के समान ब्रज के दूल्हे श्रीकृष्ण हमारी सहायता करें।

विशेष -

1. रीतिकालीन दरबारी काव्य परंपरा की अभिव्यक्ति।
2. भक्ति का भी राजसी रूप में चित्रण।
3. कटि किंकिनि कै में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग
4. जग- मंदिर- दीपक में रूपक अलंकार का प्रयोग

काव्यांश — 2 (कवित्त 1)

डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झिंगूला सोहै तन छबि भारी दै।
पवन झूलावै, केकी -कीर बतरावैं 'देव'
कोकिल हलावै --हुलसावै कर तारी दै।।
पूरित पराग सों उतारों करै राई नोन,
कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै।।

शब्दार्थ -

द्रुम -	पेड़,
बिछौना-	बिस्तर,
पल्लव-	पत्ते,
सुमन झिंगूला-	फूलों का ढीला— ढाला वस्त्र,
सोहै-	अच्छा लगता है,
छबि-	सुंदर,
पवन-	हवा,
केकी-	मोर,
कीर-	तोता,
बतरावैं-	बात कर रहे हैं,

© JCERT not to be republished

हलावैं-	हुलसावैं -मन बहलाते हैं,
कर तारी दै-	ताली बजा- बजाकर,
पूरित-	भरा हुआ,
पराग-	फूलों के कण,
नोन-	नमक,
कंजकली-	कमल की कली,
मदन-	प्रेम और सौंदर्य के देवता कामदेव,
महीप-	राजा,
ताहि-	उसे,
प्रातहि-	सुबह,
जगावत-	जगा रहा है,
चटकारी-	चुटकी

प्रसंग- प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज 'भाग- 2 कवि देव द्वारा रचित कवित्त से उद्धृत है।इन पंक्तियों में कवि ने प्रकृति की गोद में ऋतुराज बसंत के बाल रूप में आगमन और प्रकृति के विभिन्न उपादानों के द्वारा उसकी देख -भाल एवं हर्षोल्लास का वर्णन किया है।

व्याख्या - कवि देव वसंत ऋतु की कल्पना कामदेव के शिशु रूप में करते हुए कहते हैं कि पेड़ की डाली उस बालक का पलना है तथा उस पर नए-नए पत्तों का बिस्तर बिछा हुआ है। बालक ने सुंदर फूलों का ढीला - ढाला वस्त्र पहन रखा है,जो उसके शरीर को और भी अधिक सुशोभित कर रहा है। हवा उसे झूला झुला रही है। मोर और तोता मीठे स्वर में बातें करके उसका मन बहला रहे हैं। कोयल उसे हिलाती है तथा ताली बजा- बजाकर प्रसन्न कर रही है अर्थात् उसका मन बहला रही है। कमल की कली रूपी नायिका अपने सिर पर लताओं की साड़ी का पल्लू डालकर पराग रूपी राई और नमक से उसकी नजर उतारने की रस्म पूरी कर रही है ताकि वसंत रुपी इस बालक को किसी की नज़र न लग जाए। राजा कामदेव के वसंत रुपी शिशु को प्रातः काल गुलाब ताली बजा - बजाकर जगा रहा है।

विशेष

1. ऋतुराज वसंत के बाल रूप का चित्रण हुआ है।
2. परंपरागत वसंत वर्णन से भिन्न कवि देव की नई कल्पना इस कविता में व्यक्त हुई है।
3. वसंत ऋतु का कामदेव के बाल रूप में वर्णन मानवीकरण अलंकार की सुंदर प्रस्तुति हुई है।
4. साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।
5. अनुप्रास, रूपक एवं मानवीकरण अलंकार प्रयुक्त हुए हैं।

काव्यांश — 3 (कवित्त 2)

फटिक सिलानि सौं सुधर्‌यौ सुधा मंदिर,

उदधि दधि को सो अधिकाई उमगे अमंद।

बाहर ते भीतर लौं भीति न दिखैए ' देव,'

दूध को सो फेन फैल्यो आँगन फरसबंद।

© JCERT not to be republished

तारा सी तरुनि तामें ठाढी झिलमिली होति,

मोतिन की जोति मिल्यो मल्लिका को मकरंद।

आरसी से अंबर में आभा सी उजारी लगै,

प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सो लगत चंद॥

शब्दार्थ -

फटिक सिलानि-	स्फटिक नामक चमकदार पत्थर,
सुधारयौ-	सँवारा हुआ,
सुधा मंदिर-	अमृत रूपी मंदिर (आकाश)
उदधि-	समुद्र,
दधि-	दही,
अधिकाइ-	बहुत अधिक,
उमगे-	उमड़े,
अमंद-	कम न होना,
भीति-	दीवार,
फरसबंद-	फर्श रूप में बना हुआ ऊँचा स्थान,
तरुनि-	युवती,
मोतिन की जोति-	मोतियों का प्रकाश,
मल्लिका-	बेले की जाति का एक सफ़ेद फूल,
मकरंद-	फूलों का रस,
आरसी-	आइना /शीशा,
आभा-	ज्योति,
उजारी-	उजाला,
प्रतिबिंब-	परछाई /छाया

व्याख्या - उपरोक्त कवित्त में शरदकालीन पूर्णिमा की रात में चाँद - तारों से भरे आकाश की सुंदरता का वर्णन करते हुए कवि देव कहते हैं कि पूर्णिमा की रात में आकाश स्फटिक अर्थात चमकदार संगमरमर के पत्थर से बने मंदिर के समान लग रहा है। उसकी सुंदरता श्वेत दही के समुद्र के समान उमड़ रही है,जो निरंतर बढ़ती जा रही है। चाँदनी की आभा दूध के सफेद झाग के समान उस संसार रूपी मंदिर के फ़र्श पर चारों तरफ फैली हुई है जिसका कोई ओर—छोर नहीं दिखाई पड़ रहा है।आकाश रूपी मंदिर में तारे नवयुवतियों के समान खड़े झिलमिलाते प्रतीत हो रहे हैं जिससे उनकी चमक ऐसी लग रही है जैसे मोतियों की चमक मल्लिका के फूलों के रस के साथ मिलकर प्रदीप्त हो उठी हो।शीशे के समान चमकते आकाश में चाँद प्यारी राधिका के प्रतिबिंब के समान प्यारा लग रहा है।

विशेष —

1. शरदकालीन पूर्णिमा के स्वच्छ आकाश का वर्णन किया गया है।
2. आकाश स्फटिक की उजली पारदर्शी शिलाओं से निर्मित है।
3. 'तारा- सी तरुणी,' ' आरसी से अंबर ',' आभा सी उजारी ' में उपमा अलंकार है।
4. 'प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सो लगत चंद ' में प्रतीप अलंकार है।
5. जब उपमान का उपमेय के रूप में और

© JCERT not to be republished

उपमेय का उपमान के रूप में वर्णन किया जाता है, तो वहाँ प्रतीप अलंकार होता है।

प्रश्न 1. कवि ने 'श्रीब्रजदूलह' किसके लिए प्रयुक्त किया है और उन्हें संसार रूपी मन्दिर का दीपक क्यों कहा है ?

उत्तर: कवि देव ने 'श्रीब्रजदूलह' शब्द का प्रयोग श्रीकृष्ण के लिए किया है। उन्हें संसार रूपी मंदिर का दीपक इसलिए कहा गया है, क्योंकि जिस प्रकार दीपक मंदिर में ज्योति फैलाकर वहाँ आने वालें को रोशनी दिखाता है,उसी प्रकार श्रीकृष्ण भी संसार को रोशनी दिखा कर उनके कष्टों को दूर करते हैं।

प्रश्न 2. पहले सवैये में से उन पंक्तियों को छाँटकर लिखिए जिनमें अनुप्रास और रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है।

उत्तर: पहले सवैये में निम्नलिखित स्थानों पर अनुप्रास और रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है —

अनुप्रास अलंकार

'कटि किंकिनि कै' में 'क' वर्ण की आवृत्ति

'साँवरे अंग लसै पट पीत।' में 'प' वर्ण की आवृत्ति

'हिये हुलसै बनमाल सुहाई' में 'ह' वर्ण की आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।

रूपक अलंकार

जग-मन्दिर-दीपक' संसार रूपी मन्दिर के दीपक में रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य — सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए —

पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि किंकिनि कै धुनि की मधुराई ।

साँवरे अंग लसै पट पीत, हिये हुलसै बनमाल सुहाई ।

उत्तर: काव्य- सौंदर्य को दो भागों में विभक्त किया जाता है —

1 भाव - सौंदर्य 2 शिल्प - सौंदर्य

भाव सौंदर्य — कविता में श्री कृष्ण के सामंती वैभव का वर्णन किया गया है।उनके पैरों में सुंदर पायल बज रही है। उनकी कमर से करधनी की मधुर ध्वनि आ रही है। उनके साँवले शरीर पर पीले वस्त्र सुशोभित हो रहे हैं तथा गले में पहनी हुई वैजयंती माला बहुत सुंदर लग रही है।

शिल्प- सौंदर्य — माधुर्य गुण से युक्त साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है।

सवैया नामक वार्णिक छंद का प्रयोग हुआ है जिसके प्रत्येक चरण में 24 वर्ण प्रयुक्त हुए हैं।

'कटि किंकिनी कै',' पट पीत ' हिये हुलसै ' में अनुप्रास अलंकार प्रयुक्त हुआ है।

प्रश्न 4. दूसरे कवित्त के आधार पर स्पष्ट करें कि ऋतुराज वसंत के बाल—रूप का वर्णन परम्परागत वसंत वर्णन से किस प्रकार भिन्न है ?

उत्तर: वसंत के परम्परागत वर्णन को प्रेमोद्दीपन

© JCERT not to be republished

के रूप में वर्णित किया जाता है, जैसे— चारों तरफ हरियाली छाना,नायक-नायिका का परस्पर मिलना, झूले झूलना, रूठना-मनाना,फूलों का खिलना, आदि। परन्तु इस कवित्त में ऋतुराज वसंत को कामदेव को नन्हे बालक के समान दिखाया गया है। इस नन्हे से शिशु को पालने में झुलाने, बतियाने, फूलों का झिंगूला पहनाने, नजर उतारने, जगाने आदि का काम प्रकृति के विभिन्न उपादानों द्वारा किया जाना बताया जा रहा है। इसलिए यह वर्णन परम्परागत वसंत वर्णन से भिन्न है।

प्रश्न 5. ' प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै '-- इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस पंक्ति का भाव यह है कि नित्य प्रात:काल गुलाब का फूल चटक कर खिलता है। उसका चटकना चुटकी बजाने जैसा है। जिस प्रकार माँ चुटकी बजाकर अपने लाडले को जगाती है, उसी प्रकार गुलाब प्रतिदिन प्रातःकाल चुटकी बजाकर वसंत रूपी नन्हे बालक को जगाता हुआ मालूम पड़ता है।

प्रश्न 6. चाँदनी रात की सुन्दरता को कवि ने किन - किन रूपों में देखा है ?

उत्तर: कवि देव ने चाँदनी रात की सुंदरता को स्फटिक की पारदर्शी शिला के मंदिर के रूप में, दही के उमड़ते समुद्र के रूप में, दूध के सफ़ेद झाग से बने फ़र्श के रूप में, चाँदनी रात को मोती की चमक और मल्लिका के मकरंद से तारे रूपी झिलमिलाती तरुणी के रूप में देखा है।

प्रश्न 7. ' प्यारी राधिका को प्रतिबिम्ब सो लगत चंद ' — इस पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए बताएँ कि इसमें कौन — सा अलंकार है ?

उत्तर: प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में कवि ने चंद्रमा को प्यारी राधिका के प्रतिबिंब के समान बताया है। साहित्य में सामान्यतः चंद्रमा का प्रयोग उपमान के रूप में होता आया है, किंतु यहाँ प्यारी राधिका के प्रतिबिंब को चंद्रमा का उपमान बताया है अर्थात् यहाँ उपमान उपमेय और उपमेय उपमान बन गया है । उपमा अलंकार उलटे अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, अतः यहाँ प्रतीप अलंकार है।

प्रश्न 8. तीसरे कवित्त के आधार पर बताइए कि कवि ने चाँदनी रात की उज्ज्वलता का वर्णन करने के लिए किन-किन उपमानों का प्रयोग किया है?

उत्तर: चाँदनी रात की उज्ज्वलता का वर्णन करने के लिए कवि ने निम्नलिखित उपमानों का प्रयोग किया है —

स्फटिक शिला

उदधि दधि

सुधा मन्दिर

दूध के झाग से बना फ़र्श

मल्लिका का मकरंद

आरसी

चन्द्रमा

प्रश्न 9. पठित कविताओं के आधार पर कवि देव की काव्यगत विशेषताएँ बताइए।

उत्तर रीतिकालीन कवि देव मुख्य रूप से दरबारी कवि थे। अपने आश्रयदाताओं

© JCERT not to be republished

को प्रसन्न करना ही उनकी कविता का मुख्य उद्देश्य और यही उनका कवि—कर्म था। इसीलिए उन्होंने अपनी कविताओं में वैभव—विलास और सौन्दर्य के चित्र खींचे हैं। पठित कविताओं के आधार पर कवि देव की काव्यगत विशेषताओं को इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है —

रीतिकालीन कवियों की भाँति देवरचित काव्य में कल्पना-शक्ति की मनोरम झाँकियाँ देखने को मिलती हैं। वृक्षों का पालना, पत्तों का बिछौना, फूलों का झबला, हवा द्वारा पालने को हिलाना, चाँदनी रात को आकाश में बना सुधा — मन्दिर, दही का समुद्र, दूध का झाग जैसा आँगन का फर्श, आरसी से अम्बर आदि उनकी उर्वर कल्पना-शक्ति के ही परिचायक हैं।

पठितांश में सवैया और कवित्त छन्दों का प्रयोग किया गया है। भाषा सरस, मधुर, कोमल तथा संगीतात्मकता से पूरित ब्रजभाषा है।

पठितांश में अनुप्रास, रूपक, उपमा, प्रतीप आदि अलंकारों का सहज, स्वाभाविक प्रयोग द्रष्टव्य है।

देव रूप-वर्णन में जहाँ अनोखे हैं वहीं वे प्रकृति-चित्रण में सिद्धहस्त हैं।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 10. आप अपने घर की छत से पूर्णिमा की रात देखिए तथा उसके सौन्दर्य को अपनी कलम से शब्दबद्ध कीजिए।

उत्तर: आज पूर्णिमा की रात है। घर की छत पर चढ़ कर इसके अप्रतिम मनमोहक सौन्दर्य का अवलोकन कर रहा हूँ। धरती से लेकर आकाश तक स्वच्छ, शीतल चाँदनी बिछी हुई है। सारा वातावरण शान्त है। पवन मन्द गति से चल रहा है। वृक्षों की चोटियाँ मानो अपनी मन्द मुस्कान से स्वच्छ चाँदनी रात का स्वागत कर रही हैं।

© JCERT not to be republished